1

निर्गुण भक्तिकाव्य
(कबीर और जायसी)

हिंदी साहित्य की एक सुदीर्घ परंपरा रही है। यह एक रोमांचकारी और सुखद यात्रा के समान है। दसवीं कक्षा में आप विभिन्न कालों की रचनाओं को पढ़ चुके हैं। यह याद रखना ज़रूरी है कि हिंदी साहित्य को चार भागों में बाँटा गया है- आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल।

इस पाठ में हम भक्तिकाल के अंतर्गत निर्गुण भक्ति काव्य-परंपरा के दो प्रमुख कवियों के बारे में पढ़ेंगे और चर्चा करेंगे। अगले पाठ में दूसरी शाखा-सगुण काव्य-परंपरा को केंद्र में रखा जाएगा।

निर्गुण भक्ति-काव्य-परंपरा के अंतर्गत ज्ञान पर बल देने वाले कवियों को ज्ञानाश्रयी शाखा में रखा गया है, जिनमें कबीर प्रमुख हैं। दूसरी ओर प्रेम पर बल देनेवाले कवियों को प्रेमाश्रयी शाखा के अंतर्गत शामिल किया गया है, जिनमें जायसी प्रमुख हैं। इन्हीं दोनों कवियों की रचनाएँ हम इस पाठ में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप

- कबीर के काव्य में अभिव्यक्त गुरु की महिमा का उल्लेख कर सकेंगे;
- कबीर की भक्ति-भावना पर टिप्पणी लिख सकेंगे;
- जायसी के मानवीय प्रेम को ईश्वरीय प्रेम के रूप में व्याख्यायित कर सकेंगे;
- कबीर और जायसी के काव्य के भाव-सौंदर्य एवं शिल्प-सौंदर्य की सराहना कर सकेंगे।

चित्र 1.1

(क) कबीर

1.1 मूल पाठ

(i) सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघाड़िया, अनँत दिखावणहार।।

(ii) लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।।

1.2 आइए समझें

आइए इन दोहों को विस्तार से समझते हैं।

दोहा– (i) सतगुर की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघाड़िया, अनंत दिखावणहार।

शब्दार्थ

अनँत – असीमित/जिसका अंत न हो
उपगार – उपकार
लोचन – आँख
उघाड़िया – खोल दिया

सतगुर की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघाड़िया, अनंत दिखावणहार।

प्रसंग : कबीर ने गुरु-महिमा के प्रसंग में अनेक साखियाँ भी कही हैं, जिनमें गुरु को ज्ञान का स्रोत और ईश्वर के समान या कभी-कभी ईश्वर से पहले माना गया है। इन साखियों में गुरु को ज्ञान का स्रोत कहा गया है। वह ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान कराने वाला है।

व्याख्या : कबीर कहते हैं कि सतगुरु की महिमा का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता, क्योंकि वह अनंत है, उसकी कोई सीमा नहीं है। गुरु ने मुझ पर असीम उपकार किया है। उन्होंने मुझे अज्ञान के अंधेरे से निकालकर ज्ञान का मार्ग दिखाया है। गुरु ने मेरे ज्ञान-चक्षु खोल दिए हैं और मुझे परमात्मा के सच्चे स्वरूप का दर्शन कराया है।

सामान्य रूप से हमारी आँखें एक सीमा के बाद नहीं देख पाती हैं, किंतु गुरु के सानिध्य में आने के बाद हमारी दृष्टि व्यापक हो जाती है। हम सही मार्ग पर चल पड़ते हैं। इसीलिए गुरु के उपकार असीम हैं, जो कि हमारे जीवन को संतुलित और व्यवस्थित बनाते हैं।

कबीर ने गुरु को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया है और उन्हें अनंत ज्ञान का भंडार माना है। गुरु को सांसारिक बंधनों से मुक्त करनेवाला स्वीकार करते हुए कहा–

'गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पाँय।
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय।।'

कबीर ने गुरु-महिमा की प्राचीन परंपरा को आगे बढ़ाया तथा गुरु के उपकार को स्वीकार किया। यह सच है कि गुरु ही अपने अनमोल ज्ञान से हमारे जीवन को सँवारते हैं, हमें जीवन जीने की कला सिखाते हैं, जीवन को नई दृष्टि देकर माया-मोह के जंजाल से मुक्त करते हैं और ईश्वर की परम आनंदमयी भक्ति की ओर प्रेरित भी करते हैं।

चित्र 1.2 : गुरु से आशीर्वाद लेते हुए

आज गुरु-शिष्य संबंधों पर नए ढंग से विचार-विमर्श की आवश्यकता है। गुरु को उच्च स्थान पर प्रतिष्ठापित करके ही हम

शिक्षा के विस्तार, ज्ञान के प्रसार और एक नई ऊर्जावान पीढ़ी का निर्माण करने में सफल होंगे। इसीलिए कबीर का संदेश हमारे लिए आज भी प्रासंगिक और उपयोगी है।

टिप्पणियाँ :

1. कबीर का मत है कि गुरु से ही ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान होता है। इसलिए गुरु ईश्वर के समान श्रेष्ठ है। हम सभी माया-मोह में फँसे हैं, इसलिए परम सत्ता का अहसास नहीं हो पाता। उसके लिए दिव्य दृष्टि की आवश्यकता है।
2. तुलसीदास ने भी गुरु-महिमा के संदर्भ में लिखा है-
   'गुरु बिन भवनिधि तरै न कोई। जो बिरंचि संकर सम होई।।'

अर्थात् कोई शिव और ब्रह्मा जैसा सर्वज्ञ और महाज्ञानी ही क्यों न हो, बिना गुरु के उसकी मुक्ति संभव नहीं है।

3. 'अनँत' शब्द के कई बार प्रयोग में विशेष प्रकार की सार्थकता है। अनंत ईश्वर को देखने के लिए अनंत लोचनों या व्यापक दृष्टि की आवश्यकता है। गुरु का ज्ञान ऐसी ही दृष्टि प्रदान करता है। अतः गुरु का उपकार भी अनंत है और महिमा या महत्व भी।

दोहा- (ii) लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।।

शब्दार्थ :

लाली-रंगा हुआ, लाल-प्रभु, जित-जिधर, देखन-देखने।

आइए, अब कबीर के इस दूसरे दोहे को समझते हैं।

प्रसंग : कबीर निर्गुण भक्तिधारा के प्रमुख कवि हैं। वे ब्रह्म या ईश्वर के निर्गुण और निराकार रूप का दर्शन सर्वत्र करते हैं। इस पद में कबीर ब्रह्म की अनुभूति करते हैं और प्रत्येक कण में इस अनुभूति या प्रेम को ही देखते हैं। यहाँ ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम की अभिव्यक्ति भी की गई है।

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।।

व्याख्या : कबीर ने इस दोहे में ईश्वर के प्रति अपनी अनुभूति की मार्मिक अभिव्यक्ति की है। वे कहते हैं कि यह सारी भक्ति, यह सारा संसार, यह सारा ज्ञान; मेरे ईश्वर का अर्थात् मेरे लाल का ही है, जिसे मैं महसूस करता हूँ। मैं जिधर भी देखता हूँ, उधर मेरे लाल या ईश्वरीय अनुभूति का ही रूप दिखाई देता है। मुझे संसार के हर एक कण में, हर जीव में मेरे लाल की ही सत्ता अर्थात् रूप का प्रकाश दिखाई देता है। सभी प्राणियों में मुझे अपने ईश्वर के ही दर्शन होते हैं। स्वयं मुझमें भी हमेशा अनंत के प्रति प्रेम का वास दिखाई देता है।

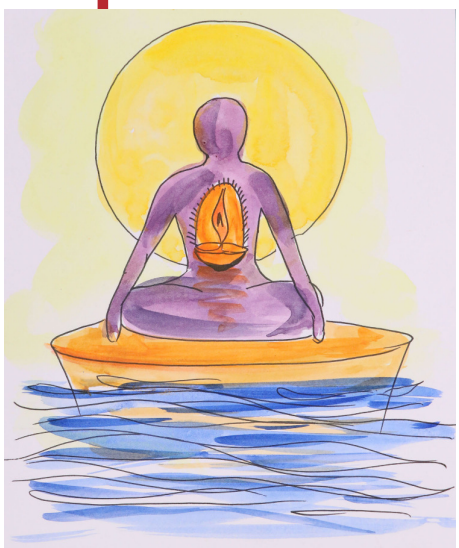

चित्र 1.3

कबीर की भक्ति में पूर्ण समर्पण और शरणागति का भाव है। उनकी आत्मा में भक्ति का ऐसा अंकुर प्रस्फुटित हुआ कि ईश्वर के अलावा संसार में सब कुछ सारहीन प्रतीत होने लगा। ईश्वर के प्रेम में वे हमेशा अभिभूत रहते थे अर्थात् डूबे रहते थे। इस दोहे में 'लाल' और 'लाली' शब्द का प्रयोग प्रतीकात्मक है। लाल रंग प्रेम और जीवंतता का प्रतीक है। कबीर ने 'लाल' शब्द का प्रयोग निर्गुण-निराकार ईश्वर और 'लाली' शब्द का प्रयोग उसकी सत्ता या उसके होने के प्रकाश के रूप में किया है। इस दोहे के अंत में कबीर ने निर्गुण एवं निराकार ईश्वर की सत्ता में अपने को विलीन कर दिया है। इस प्रकार लाल की लाली में स्वयं को भी रँग लिया है। 'लाल' शब्द में प्रेम की पराकाष्ठा है। कबीर के एक अन्य दोहे में यही भाव इस तरह कहा गया है–

'तूँ तूँ करता तूँ भया, मुझमें रही न हूँ।
वारी फेरी बलि गई, जित देखौं तित तूँ।।'

टिप्पणियाँ :

1. कबीर में दास्य-भाव की भक्ति दिखाई देती है। वे ईश्वर को स्वामी मानते हैं।
2. प्रतीकात्मक पर सरल भाषा में भक्ति का संदेश दिया है। कबीर के विचार आत्मा में उतर जाते हैं।
3. कबीर को वाणी का डिक्टेटर माना गया है। उनकी भाषा में अनेक भाषाओं का मेल है। लोकभाषा का सौंदर्य और भावों की गहराई है। उनकी भाषा को 'सधुक्कड़ी' नाम दिया गया है।
4. कबीर के दोहों को 'साखी' भी कहा जाता है। 'साखी' छंद नहीं है। 'साखी' शब्द संस्कृत के 'साक्षी' का तद्भव रूप है। 'साक्षी' का अर्थ होता है- गवाह। साक्षी वह है जिसने स्वयं अपनी आँखों से सत्य को देखा हो। अत: साक्षी का अर्थ हुआ- आँखों से देखे हुए का वर्णन। कबीर ने साखियों में वर्णित तथ्यों का स्वयं साक्षात्कार किया है। यह ज्ञान सुनी-सुनाई बातें या केवल पोथियों में उपलब्ध ज्ञान नहीं है।
5. अनुप्रास अलंकार।
6. जिस प्रकार पहली साखी में 'अनँत' शब्द का सार्थक एवं सुंदर प्रयोग हुआ है, उसी प्रकार इस दूसरी साखी में भी 'लाली' शब्द का प्रयोग है।

पाठगत प्रश्न 1.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कबीर किस काल के कवि थे?
   (क) आदिकाल (ख) भक्तिकाल
   (ग) रीतिकाल (घ) आधुनिक काल
2. कबीर की भक्ति किस प्रकार की थी?
   (क) सख्य (ख) शृंगार
   (ग) दास्य (घ) करुण
3. कबीर की भाषा को क्या नाम दिया गया?
   (क) सधुक्कड़ी (ख) अवधी
   (ग) ब्रजभाषा (घ) हिंदी

क्रियाकलाप 1.1

गुरु-शिष्य के संबंध में आपके क्या विचार हैं? इसे कहानी, कविता या अन्य किसी रचनात्मक रूप में प्रस्तुत करें।

(ख) मलिक मुहम्मद जायसी

आपने कबीर के दोहे पढ़ लिए हैं। आइए, अब हम महाकवि जायसी के काव्य का एक अंश पढ़ते हैं। जायसी ने चित्तौड़ के राजा रत्नसेन और सिंहलद्वीप की राजकुमारी पद्मावती की प्रेमकथा को आधार बनाकर 'पद्मावत' नामक महाकाव्य की रचना की थी। इस पाठ में हम इसी प्रेम के स्वरूप को जानेंगे।

चित्र 1.4

1.3 मूल पाठ

कै अस्तुति जब बहुत मनावा। सबद अकूत मँडप महँ आवा।1।
मानुष पेम भएउ बैकुंठी। नाहिं त काह, छार भरि मूठी।2।
पेमहिं माहँ बिरह-रस रसा। मैन के घर मधु अमृत बसा।3।
निसत धाइ जौं मरै त काहा। सत जौं करै बैठि तेहि लाहा।4।
एक बार जौं मन देइ सेवा। सेवहि फल प्रसन्न होइ देवा।5।
सुनि कै सबद मँडप झनकारा। बैठा आइ पुरुब के बारा।6।
पिंड चढ़ाइ छार जेति आँटी। माटी भएउ अंत जो माटी।7।
माटी मोल न किछु लहै, औ माटी सब मोल।
दिस्टि जौं माटी सौं करै, माटी होइ अमोल।

1.4 आइए समझें

आइए, अब जायसी के काव्य के इस अंश को समझते हैं।

प्रसंग : प्रस्तुत काव्यांश जायसी के महाकाव्य 'पद्मावत' के 'मंडपगमन-खंड' से लिया गया है। सिंहल द्वीप के राजा की पुत्री पद्मावती के अलौकिक रूप का वर्णन सुनकर चित्तौड़ के राजा रत्नसेन इस सीमा तक मुग्ध हो गए कि जोगी का वेश बनाकर पद्मावती के दर्शन के लिए अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए सिंहलद्वीप पहुँच गए। वहाँ पद्मावती के दर्शन के लिए आकुल राजा ने शिव से प्रार्थना की है। इस चौपाई में इसी का वर्णन किया गया है।

व्याख्या : मनुष्य अपने निःस्वार्थ एवं दिव्य प्रेम के कारण दिव्यता प्राप्त कर लेता है, अन्यथा उसका शरीर तो इतना नश्वर और क्षणभंगुर है कि वह मुट्ठी भर राख के बराबर हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य के हृदय में स्थित प्रेम ने ही उसे देवताओं के समान महानता प्रदान की है, अन्यथा मर कर मनुष्य-शरीर को राख का ढेर होने में कुछ भी समय नहीं लगता। शिक्षार्थियों, यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि प्रेम में सब कुछ आनंददायक नहीं होता, इसमें संयोग का सुख है तो वियोग का अथाह कष्ट भी है; जैसे-मधुमक्खी के छत्ते में शहदरूपी अमृत है, तो डंक लगने का कष्ट भी है। अमृत-प्राप्ति के लिए अनेक कठिनाइयों का सामना करना ही पड़ता है।

शब्दार्थ

अकूत–दिव्य, अलौकिक
बैकुंठी–दिव्यलोक का अधिकारी
छार–राख
मूँठी–मुट्ठी
मैन–मोम
अम्रित–अमृत
निसत–असत्य, सत्यहीन
लाहा–लाभ
परसन–प्रसन्न
बारा–द्वार
पिंड–शरीर
आँटी–लगाना, समाना

टिप्पणी

आप भी यह बात समझते होंगे कि सत्यहीन व्यक्ति रात-दिन मेहनत करके अंत में मृत्यु को प्राप्त होता है, परंतु सत्य का आचरण करने वाले व्यक्ति को बैठे-बिठाए ही लाभ मिल जाता है। कहने का तात्पर्य है कि मिथ्या आचरण करने वाले को अंत में हार मिलती है और सच्चे व्यक्ति को अंत में सुख-ही-सुख मिलता है। यदि मनुष्य सच्चे मन से सेवा करता है, तो देवता प्रसन्न हो जाते हैं। शिक्षार्थियो, इसीलिए हमारी संस्कृति में सेवा का इतना महत्व है। 'पद्मावत' की इन पंक्तियों में आप देखते हैं कि इस प्रकार की वाणी मंडप में झंकृत होने लगी। यह ध्वनि मंदिर में गूँजने लगी। दिव्य वाणी को सुनकर राजा रत्नसेन श्रद्धा एवं प्रेम से भर उठे और पूर्व दिशा के द्वार पर आकर बैठ गए। प्रेम के प्रति उनका विश्वास और दृढ़ हो उठा। उन्होंने अपने शरीर पर भस्म लगा ली और सोचा कि हमारा शरीर मिट्टी है और इसे अंत में मिट्टी में ही मिल जाना है। अत: मैं अपने शरीर पर भस्म लगाकर यह सिद्ध कर दूँ कि यह तो मिट्टी ही है और अंत में मिट्टी में ही मिलकर इसे मिट्टी ही हो जाना है।

यूँ तो संसार में मिट्टी को तुच्छ और हेय समझा जाता है, परन्तु दुनिया की जितनी भी मूल्यवान वस्तुएँ हैं, वे सब मिट्टी ही हैं। जो व्यक्ति इस शरीर को मिट्टी मान लेता है, उसकी मिट्टी अनमोल हो जाती है। शिक्षाथियो, यहाँ कवि सूफ़ी दर्शन की एक विशेषता की ओर संकेत कर रहा है कि जो मनुष्य शरीर की नश्वरता और मृत्यु की अटलता को समझ लेता है, उसके लिए जीवन अत्यंत सुखद बन जाता है। वह शरीर को ईश्वर-प्राप्ति का माध्यम बना लेता है। वह प्रेम की श्रेष्ठता को समझकर उसे प्राप्त करने का निरंतर प्रयास करता है। आपने भी यह अनुभव किया होगा कि भावनाओं का जीवन में कितना महत्व है।

1.5 भाव-सौंदर्य

कबीरदास ने बड़ी ही भावुकता से सतगुरु के महत्व को वर्णित किया है। वे गुरु-महिमा की अनंतता का उल्लेख इसलिए करते हैं कि गुरु ने शिष्य की ज्ञान की अनंत दृष्टि का विस्तार कर दिया और उसे इस योग्य बना दिया कि वह अनंत सत्ता को इस ज्ञान के माध्यम से पा सके। दूसरी साखी में कबीर चारों तरफ उस अनंत की ललिमा का विस्तार देखते हैं और स्वयं के भीतर भी उसका साक्षात्कार करते हैं।

जायसी ने अपने काव्य में सूफ़ी दर्शन को बहुत ही मार्मिक रूप में व्यक्त किया है। वे शरीर की नश्वरता और मृत्यु की अटलता का उल्लेख करते हुए, शरीर को ईश्वर-प्राप्ति का माध्यम बनाने पर ज़ोर देते हैं। वे मानते हैं कि प्रेम के महत्व को पहचानकर ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है।

1.6 शिल्प-सौंदर्य

आपने समझा कि कबीर ने 'अनँत' शब्द का कितना सार्थक प्रयोग कियाा है। इस शब्द का संबंध ईश्वर, दृष्टि और गुरु द्वारा किए गए उपकार से है। इसी प्रकार 'लाली' शब्द का भी प्रयोग है। कबीर की भाषा आम जनता की भाषा है, इसीलिए बहुत प्रभावशाली है।

जायसी में कवित्व-शक्ति और भाषा का सामर्थ्य अद्भुत है। जायसी ने पद्मावत में अलंकारों

का अत्यंत स्वाभाविक एवं कुशल प्रयोग किया है। 'पदमावत' में आप भाषा की मार्मिक अभिव्यक्ति भी देख सकते हैं। उदाहरण के रूप में यह पंक्ति देखिए–

मानुष पेम भएउ बैकुंठी। नाहिं त काह, छार एक मूँठि।।

यहाँ प्रेमरहित मनुष्य-जीवन को और इस संसार को भी राख के समान माना गया है।

इस उक्ति को कवि ने एक लोक प्रचलित कहावत द्वारा चरितार्थ किया है। आम भाषा में कहते हैं कि मनुष्य का शरीर मुट्ठीभर राख के समान है। यह उपमा अलंकार का भी एक उदाहरण है।

कवि ने मनुष्य जीवन में आने वाले विरह-आनंद की तुलना अमृत और मधु से की है। देखिए–

पेमहि माहँ बिरह- रस रसा। मैन के घर मधु अमृत बसा।

'माँटी' शब्द के प्रयोग में कवि ने यमक की शोभा को बढ़ा दिया है।

जायसी ने अवधी भाषा का प्रयोग भी अत्यंत कुशलता से किया है। सामान्य शब्दों के प्रयोग करके भी कवि ने उनके अर्थ को महत्वपूर्ण बना दिया; जैसे-

मानुस पेम भयउ 'बैकुंठी'

यहाँ 'बैकुंठी' शब्द के प्रयोग से पूरी पंक्ति के अर्थ को विशिष्ट और अलौकिक स्वरूप से जोड़ दिया गया है। यहाँ 'बैकुंठी' कहने से मानवीय प्रेम के अलौकिक स्वरूप की अनुभूति हुई है।

कवि ने इन चौपाइयों में खूबी के साथ मानव जीवन की क्षणभंगुरता एवं नश्वरता का भी उल्लेख किया है। सूफी काव्य में सांसारिक प्रतीकों के माध्यम से आध्यात्मिक भावों को उजागर किया गया है।

पाठगत प्रश्न 1.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. राजा रत्नसेन ने देवताओं की स्तुति किसकी प्राप्ति के लिए की–

   (क) धन (ख) राज्य

   (ग) पद्मावती (घ) शिव

2. 'पद्मावत' के काव्यांश में सर्वाधिक महत्व दिया गया है–

   (क) मिट्टी को (ख) बैकुण्ठ को

   (ग) प्रेम को (घ) अमरता को

3. 'पद्मावत' महाकाव्य की भाषा है–

   (क) ब्रजभाषा (ख) अवधी

   (ग) भोजपुरी (घ) सधुक्कड़ी

1.7 आपने क्या सीखा (चित्रात्मक प्रस्तुति)

निर्गुण काव्य

कबीर

भाव-पक्ष :

- गुरु की महिमा
- गुरु-ज्ञान का स्रोत
- ब्रह्म (ईश्वर) की सर्वव्यापकता
- अनन्य प्रेम एवं पूर्ण समर्पण

शिल्प-पक्ष :

- भाषा की समावेशिता
- दोहा छंद
- साखी
- अनुप्रास अलंकार
- शब्दों का सार्थक प्रयोग

जायसी

भाव-पक्ष :

- अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति
- सांसारिक जीवन की क्षणभंगुरता
- प्रेम का महत्व

शिल्प-पक्ष :

- अवधी भाषा
- दोहा-चौपाई छंद
- मसनवी शैली

1.8 सीखने के प्रतिफल

- सभी प्रकार की विविधताओं (धर्म, जाति, लिंग, क्षेत्र एवं भाषा-संबंधी) के प्रति सकारात्मक एवं विवेकपूर्ण समझ लिखकर, बोलकर एवं विचार-विमर्श के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं।
- हिंदी भाषा एवं साहित्य की परंपरा की समझ लिखकर, बोलकर एवं विचार-विमर्श के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं।
- परिवेश से हिंदी के साथ-साथ अन्य भाषाओं को भी सीखते हैं एवं भारतीय भाषाओं के आपसी संबंधों को भी समझते हैं।
- विभिन्न साहित्यिक विधाओं को पढ़ते हुए उनके सौंदर्य पक्ष एवं व्याकरणिक संरचनाओं पर चर्चा करते हैं।

1.9 योग्यता-विस्तार

कबीरदास

निर्गुण भक्ति-शाखा के कवियों में 'कबीरदास' का नाम प्रमुख है। इनकी जन्मतिथि तथा माता-पिता आदि के बारे में अनेक मत हैं। इनके गुरु के बारे में भी अलग-अलग मान्यताएँ हैं। कबीर को रामानंद का शिष्य माना जाता है, किंतु उन पर हठयोगियों तथा सूफ़ी मुसलमान फकीरों का भी प्रभाव था।

कबीर की साधना-पद्धति में कई पद्धतियों का मेल दिखाई देता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, ''उन्होंने ब्रह्मवाद के साथ सूफियों के भावात्मक रहस्यवाद, हठयोगियों के साधनात्मक रहस्यवाद तथा वैष्णवों के अहिंसावाद का मेल करके अपना पंथ खड़ा किया।''

'कबीर' की बानियों का संग्रह 'बीजक' के नाम से प्रसिद्ध है। इसके तीन भाग हैं- 'साखी', 'सबद' और 'रमैनी'।

मलिक मुहम्मद जायसी (1492-1542)

मलिक मुहम्मद जायसी अमेठी (उत्तर प्रदेश) के समीप जायस के रहनेवाले थे, इसीलिए उनका नाम जायसी पड़ा। ये प्रसिद्ध सूफ़ी फकीर शेख मोहिदी (मुहीउद्दीन) के शिष्य थे। अमेठी के राजघराने में इनका बहुत सम्मान था। जीवन के अंतिम दिनों में जायसी अमेठी से दो मील दूर एक जंगल में रहा करते थे। वहीं इनकी मृत्यु हुई।

जायसी की प्रसिद्धि का मुख्य आधार इनका प्रबंधकाव्य 'पद्मावत' है। 'पद्मावत' में प्रेमगाथा की परंपरा पूर्ण प्रौढ़ता से मिलती हैं। इसमें इतिहास और कल्पना का अद्भुत संगम है। इस प्रबंध-काव्य में सिंहल देश की राजकुमारी पद्मावती और चित्तौड़ के राजा रत्नसेन के अलौकिक प्रेम की कथा है, जो लोककथा पर आधारित है। जायसी ने दोनों की प्रेम-कथा को इस प्रकार गूँथा है कि उसमें ईश्वरीय सत्ता का आभास होता है। प्रेम का यह लोकधर्मी स्वरूप मानवमात्र के लिए प्रेरणादायी है।

'पद्मावत' में कवि ने फ़ारसी की मसनवी शैली का प्रयोग किया है। संपूर्ण काव्य खंडों या अध्यायों में विभाजित है। जायसी ने इसमें दोहा-चौपाई शैली का प्रयोग किया है। इसकी भाषा ठेठ अवधी है।

जायसी ने अलंकारों का बहुत सुंदर प्रयोग किया है। लोक-संस्कृति उनके काव्य का मुख्य आधार है। 'पद्मावत' के अतिरिक्त जायसी की प्रमुख कृतियाँ हैं- 'अखरावट' और 'आखिरी कलाम'। 'आखिरी कलाम' में जायसी ने कयामत के दिन का चित्रण प्रस्तुत किया है। 'अखरावट' में वर्णमाला के एक-एक अक्षर को लेकर सिद्धांत संबंधी तत्वों से भरी चौपाइयाँ कही गई हैं।

टिप्पणी

1.9 पाठांत प्रश्न

1. 'लोचन अनँत उघाड़िया, अनँत दिखावणहार' से 'कबीर' का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।
2. 'लाली मेरे लाल की' में 'लाली' और 'लाल' से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए।
3. कबीर की भाषा पर टिप्पणी कीजिए।
4. आज के समय में प्रेम के महत्व पर एक टिप्पणी लिखिए।
5. माटी मोल न किछु लहै औ माटी सब मोल।
   दिस्टि जौं माटी-सौं करै माटी होइ अमोल।।
   यहाँ कवि ने 'माटी' शब्द का प्रयोग किन-किन अर्थों में किया है?
6. 'पद्मावत' का काव्यांश हमें क्या प्रेरणा देता है?

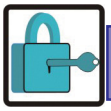

1.10 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1 1. (ख) 2. (ग) 3. (क)

1.2 1. (ग) 2. (ग) 3. (ख)